2 जून 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

लोक में दानियों से अधिक सम्मान त्यागियों का होता है; क्योंकि त्याग शुद्धभाव है और दान शुभभाव; त्याग धर्म है और दान पुण्य।

ह्न धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ ह्न 133

वर्ष : 32, अंक : 5 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (प्रथम), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

43 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

कोलारस (म.प्र.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के तत्त्वावधान में संचालित शिविरों की श्रृंखला में 43 वाँ श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का भव्य आयोजन कोलारस मुमुक्षु मण्डल, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा कोलारस एवं श्री आदिनाथ जिनालय समिति कोलारस द्वारा बृहद्स्तर पर किया गया।

शिविर के प्रथम दिन उद्घाटन के अवसर पर विशाल शोभायात्रा नगर के विभिन्न मार्गों से निकाली गई, जिसमें महिलाएँ अपने सर पर कलश एवं पंच परमागम ग्रंथों को लेकर श्री आदिनाथ जिनालय पहुँची, जहाँ श्री राकेशकुमारजी विवेककुमारजी जैन सर्राफ (कोलारसवाले) कोटा के करकमलों से ध्वजारोहण किया गया। मंगल कलशों की स्थापना श्री पारसकुमारजी जैन परिवार कोलारस द्वारा की गई, तत्पश्चात मंत्रोच्चारण के साथ पर्दा हटाकर शिविर का औपचारिक उद्घाटन श्री आनंदकुमारजी चौधरी (कोलारसवाले) मुंगावली ने किया। प्रशिक्षणार्थियों के लिये तैयार की गई आकर्षक किट का विमोचन श्री गोपालजी अग्रवाल बदरवास ने किया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने मंगल उद्बोधन में श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर क्या, क्यों और कैसे? विषय का सरल एवं सुबोध शैली में खुलासा किया।

आयोजित सभा की अध्यक्षता जुगराजजी कासलीवाल कोलकाता ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री रविंद्र शिवहरे - अध्यक्ष नगर पंचायत कोलारस, श्री जितेन्द्रकुमार जैन पत्तेवाले, श्री गोपाल अग्रवाल, पण्डित श्यामलालजी ग्वालियर, पण्डित अभयकुमारजी बदरवास के साथ-साथ सभी विशिष्ट विद्वत्गण मंचासीन थे।

कार्यक्रम का संचालन सेठ सुकमालजी जैन कोलारस एवं पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया। स्वागत भाषण पण्डित गिरनारीलालजी जैन तथा आभार प्रदर्शन पण्डित किशनमलजी जैन ने किया।

प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों का लाभ उपस्थित जन समुदाय को मिला।

शिविर में प्रतिदिन सायंकाल तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के 'भगवान महावीर का जीवन एवं उनके सिद्धान्त' विषय पर हुये मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त दोनों समय बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के निमित्तोपादान एवं समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला।

बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्दति की कक्षा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा ने ली। प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्दति की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित कोमलचन्दजी जैन टडा द्वारा ली गई।

शिविर में ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री द्वारा छहढाला एवं पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री द्वारा लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा ली गई। प्रात:कालीन प्रौढ कक्षा के माध्यम से पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा का लाभ मिला।

शिशुवर्ग की कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित सुदीपजी शास्त्री अमरमऊ, पण्डित अंकितजी छिन्दवाड़ा एवं पण्डित पंकजजी बकस्वाहा द्वारा किया गया।

इसके अलावा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना, पण्डित नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल जयपुर, श्रीमती रंजना बंसल अमलाई, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी शास्त्री कोलारस, पण्डित शीतलजी नौगांव, इंजि. संजयजी जैन खनियांधाना, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित अशोकजी शास्त्री सोनागिर, पण्डित विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन, पण्डित विजयजी बोरालकर कोटा, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री धर्मेन्द्रकुमार संजीवकुमार प्रवीणकुमारजी जैन चौधरी परिवार कोलारस, श्रीमती सुनीता बजाज ध.प. श्री प्रेमचन्दजी बजाज एवं सुपुत्र श्री तन्मय व ध्याता बजाज कोटा तथा श्री राजमल जैन एवं देवेन्द्रकुमार ऋषभकुमार महेन्द्र नीरज निपुण जैन परिवार कोलारस थे।

इस अवसर पर आयोजित श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर मण्डल विधान के आयोजनकर्त्ता श्री महेशकुमार पारसकुमारजी प्रयांशु जैन (मोरीवाले) कोलारस परिवार थे।

शिविर के माध्यम से बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण के माध्यम से लगभग 215 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण लिया।

शिविर में बाहर गाँव से पधारे लगभग 750 साधर्मियों के अतिरिक्त सैंकड़ों स्थानीय साधर्मी भाई-बहिनों ने भरपूर लाभ लिया। शिविर में लगभग 53 हजार रुपये का सत्साहित्य एवं 3500 घण्टों के प्रवचन घर-घर पहुँचे।●

सम्पादकीय –

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु (29)

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

जिनागम में निश्चयधर्म-व्यवहारधर्म, श्रावकधर्म-मुनिधर्म, रत्नत्रयधर्म, दयाधर्म, अहिंसाधर्म, उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्म इत्यादि अनेक प्रकार से धर्म के स्वरूप को समझाया गया है। इन सब विविध रूपों का मूलभाव एक वीतरागता ही है। कहा भी है ह्न

धम्मो वत्थुसहावो, खमादिभावो य दसविहो धम्मो।
रयणत्तयं च धम्मो, जीवाणं रक्खणं धम्मो।।

'वस्तु का स्वभाव धर्म है; दश प्रकार के क्षमादिभाव भी धर्म हैं। रत्नत्रय धर्म है और जीवों की रक्षा करना भी धर्म है।[१]'

आचार्य पूज्यपाद कहते हैं ह्न 'जो इष्ट स्थान (मोक्ष) में पहुँचाता है, उसे धर्म कहते हैं।[२]'

'निज शुद्धभाव का नाम ही धर्म है। यह धर्म संसार में पड़े हुए जीवों की चतुर्गति के दुःखों से रक्षा करता है।'

निश्चय से संसार में गिरते हुए आत्मा की जो रक्षा करे वह विशुद्ध-ज्ञान-दर्शनलक्षणवाला निजशुद्धात्मा की भावनारूप धर्म है।

जहाँ एक ओर आ. कुन्दकुन्द ने अष्टपाहुड़ में **'धम्मो दयाविसुद्धो।** धर्म दया करके विशुद्ध होता है ह्न ऐसा कहा है।

तथा प्रवचनसार गाथा-७ में यह कहा है कि ह्न 'चारित्र ही धर्म है। वह धर्म साम्यभावरूप है और मोह एवं राग-द्वेष रहित आत्मा का परिणाम साम्यभाव है।[३]'

भावपाहुड़ गाथा ८३ में भी कहा है कि ह्न 'मोह व क्षोभरहित अर्थात् मिथ्यात्व राग-द्वेष से रहित आत्मा का परिणाम धर्म है।'

ऐसे निश्चय धर्म को प्राप्त करने के लिए जिस श्रावक-मुनि के आचरण को जीवन में अपनाया जाता है, वह निश्चय का साधन व्यवहार धर्म है।

इसप्रकार निश्चय-व्यवहार धर्म की संक्षिप्त चर्चा के बाद इन्हीं के बारे में विशेष समझाते हैं।

सम्यक्त्वपूर्वक किये गये व्यवहारधर्म से परम्परा मोक्ष प्राप्त होता है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि विविध विवक्षाओं से प्रतिपादित धर्म अनेक नहीं हैं, बल्कि धर्म तो एक वीतरागभावरूप ही है। धर्म के प्रतिपादन की विवक्षाएँ अनेक हैं।

इसप्रकार जिनागम में धर्म की प्ररूपणा मुख्यतः चार प्रकार से है ह्न (१) वस्तुस्वभावरूप धर्म (२) उत्तमक्षमादिक दशलक्षण धर्म, (३) सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप धर्म और (४) जीवरक्षारूप दया धर्म।

जिनागम में सम्यग्दर्शन को धर्म का मूल कहा गया है। जिसप्रकार वृक्ष का मूल उसकी जड़ है, जड़ के बिना वृक्ष की उत्पत्ति, वृद्धि और पूर्णता सम्भव नहीं है, उसीतरह सम्यग्दर्शनरूपी जड़ के बिना धर्म की उत्पत्ति, वृद्धि और पूर्णता सम्भव नहीं है।

सम्यग्दर्शन के बिना उग्र से उग्र तप आदि की धार्मिक क्रियाएँ एवं दया, दान आदि के शुभभाव भी अनन्त कष्टों का निवारण करने में असमर्थ हैं।

आत्मस्वभाव की यथावत् प्रतीति करना सम्यग्दर्शन है और यह सम्यग्दर्शन ही अहिंसा, सत्य इत्यादि समस्त धर्मों का मूल है। अतः पहले वस्तुस्वभाव की प्रतीति द्वारा सम्यग्दर्शन प्रगट करना अति आवश्यक है। निश्चय से शुद्ध ज्ञानचेतना परिणाम ही धर्म है।

यदि वहाँ निश्चय से विचार किया जाए तो उक्त ४ प्रकारों में शुद्ध चेतनारूप धर्म एक ही प्रकार का है। स्पष्टीकरण इसप्रकार है ह्न

(१) वस्तुस्वभावरूप धर्म ह्न दर्शन-ज्ञान चेतना जीववस्तु का स्वभाव है। उस दर्शन-ज्ञान-चेतना का परिणाम शुद्ध चेतनारूप परिणमित होना ही धर्म है। इसप्रकार 'वस्तु का स्वभाव धर्म' ह्न ऐसा कहने से **शुद्धचेतनारूप** धर्म ही प्रसिद्ध होता है; क्योंकि यही जीव का स्वभाव है। जीव की जो दया, दान, पूजा, व्रत, भक्ति की शुभ वृत्तियाँ अथवा हिंसादि की अशुभ वृत्तियाँ उठतीं हैं, वे सब जीव का स्वभाव नहीं होने से इन्हें अधर्म कहा है। देहादि जड़ की क्रिया तो आत्मा कर ही नहीं सकता, किन्तु शुभपरिणाम भी पुण्य बंध का कारण है, वीतरागतारूप धर्म नहीं। वस्तुतः धर्म तो शुद्धचेतनामय ही है; इसकारण शुभाशुभरूप विकारी भावों का होना अधर्म है। ''मैं ज्ञाता ही हूँ, ज्ञाता-दृष्टापना ही मेरा स्वरूप है'' ह्न ऐसी प्रतीतिपूर्वक ज्ञान-दर्शनमय चेतना की शुद्धपर्याय को धर्म कहा गया है।

जितने अंश में चेतना निर्विकाररूप से परिणमित होती है, उतने अंश में धर्म है और जितने अंश में पुण्य-पाप के विकाररूप परिणमित होती है, उतना अधर्म है। ''देह की क्रिया मेरा स्वरूप नहीं है, ज्ञाता-दृष्टापना ही मेरा वास्तविक स्वरूप है'' ह्न ऐसा जाननेवाले ज्ञानी के भी निचली दशा में पुण्य-पाप के परिणाम होते अवश्य हैं, किन्तु वे ऐसा जानते हैं कि पुण्य-पाप के विकार से रहित शुद्धचेतना परिणति में जितनी स्थिरता हो उतना ही धर्म है।

(२) उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्म ह्न आत्मा क्रोधादि कषायरूप परिणमित न हो और अपने स्वभाव में स्थिर रहे, यही उत्तम क्षमादिरूप धर्म है; इसप्रकार उत्तम क्षमादिरूप धर्म कहने से भी शुद्धचेतना के **परिणामरूप धर्म** ही सिद्ध होता है; क्योंकि उसमें शुद्ध चेतना के परिणामों को पुण्य-पाप से छुड़ाकर ज्ञानस्वभाव में ही स्थिर करना कहा है। मैं ज्ञानस्वरूप ज्ञाता हूँ, मेरे ज्ञान में कोई परद्रव्य इष्ट-अनिष्ट नहीं है, मेरे ज्ञान स्वभाव में मेरा कोई शत्रु अथवा मित्र नहीं है, दुर्जन या सज्जन नहीं है ह्न ऐसे भानपूर्वक स्वरूप की स्थिरता हो, तभी उत्तम क्षमादि धर्म होते हैं।

(३) दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप धर्म ह्न दर्शन-ज्ञान-चारित्र में भी **शुद्धचेतनारूप धर्म** ही सिद्ध होता है; क्योंकि शुद्धज्ञान-चेतना में

१. कार्तिकेयानुप्रेक्षा, गाथा ४७६
२. सर्वार्थसिद्धि ९/२ ३. प्रवचनसार गाथा-७-८

पुण्य–पाप नहीं हैं, शरीरादि की क्रिया नहीं है, मात्र शुद्धस्वभाव है और वही मूल धर्म है। इसप्रकार दर्शन–ज्ञान–चारित्ररूप धर्म कहने से भी शुद्धचैतन्यत्व ही सिद्ध हुआ।

(४) जीवदयारूप धर्म ह्न दया दो प्रकार की है ह्न १. स्व–दया, २. पर–दया। 'जीवदया' के नाम से लोग पर–दयारूप शुभराग में ही धर्म मान रहे हैं। वे स्व–दया के यथार्थस्वरूप को नहीं समझते। **क्रोधादि कषायों के वश होकर आत्मा में रागादि की उत्पत्ति रूप हिंसा न करना ही वास्तविक स्व जीवदया है। इस अपेक्षा सबसे महान हिंसा मिथ्यात्व है। मिथ्यात्व का त्याग किये बिना कभी भी यह स्व–हिंसा नहीं रुक सकती ●**

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के ७५वें जन्म दिवस पर

धूमधाम से शुरू हुआ हीरक जयन्ती वर्ष

कोलारस : यहाँ चल रहे 43वें आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर के दौरान फैडरेशन ने 23 मई को आयोजित अपने 31वें अधिवेशन में डॉ. भारिल्ल के 75वें जन्म दिवस को 25 मई 09 से 25 मई 2010 तक **डॉ. भारिल्ल हीरक जयन्ती वर्ष** के रूप में मनाने का निर्णय लिया।

25 मई को डॉ. भारिल्ल का 75वाँ जन्मदिवस है। यह जानकर सभी शिविरार्थियों में हर्ष की लहर दौड़ गई। फैडरेशन कोलारस एवं सभी शिविरार्थियों ने इसे अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाने की योजना बनाई।

इसके अंतर्गत 25 मई को डॉ. भारिल्ल जैसे ही देवदर्शन करके जिनालय से बाहर आये, सभी ने उन्हें जन्म–दिवस की बधाइयाँ दीं और ससम्मान कार्यक्रम स्थल तक लेकर गये। इस अवसर पर आयोजित सभा में डॉ. भारिल्ल के अभिनंदन के उपरांत उनके बहुमुखी व्यक्तित्व व कर्तृत्व को स्मरण करते हुए पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान को जन–जन तक पहुँचाने के कार्य में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हुए दीर्घजीवी होने की कामना की गई।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि ''यह सम्मान मेरा सम्मान नहीं, जिनवाणी का सम्मान है।'' पूज्य गुरुदेवश्री को स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि ''मैंने उनके जीवन से बहुत सीखा है एवं उनकी चिता के समक्ष बाबूभाई और मैंने गुरुदेवश्री के बताये हुए वीतरागी तत्त्वज्ञान को जन–जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया था। बाबूभाई तो मुझे छोड़कर चले गये। लेकिन अभी मैं बैठा हुआ हूँ और आजीवन यह कार्य करता रहूँगा।'' डॉ. भारिल्ल के वक्तव्य को सुनकर सारी सभा भावविभोर हो गई। कार्यक्रम का संयोजन फैडरेशन शाखा कोलारस ने किया।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती वर्ष प्रारम्भ

शिष्यों ने दी अपने गुरु को अनूठी गुरु दक्षिणा

कोलारस : प्रशिक्षण शिविर के दौरान आया 25 मई 09 का दिन इतिहास में सदा के लिए अपनी छाप छोड़ गया। डॉ. भारिल्ल के 75वें जन्म–दिवस के अवसर पर प्रात:काल फैडरेशन शाखा कोलारस, मुमुक्षु मण्डल एवं शिविरार्थियों द्वारा उनका हीरक जयन्ती दिवस अपूर्व उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने जब गुरुदेव की चिता के समक्ष की गयी आजीवन तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार की प्रतिज्ञा को स्मरण किया तो वहाँ उपस्थित सभा समुदाय के साथ–साथ उनका शिष्य समुदाय भी भावुक हो उठा।

उनके शिष्यों ने इस अवसर को और भी स्मरणीय और अनूठे ढंग से मनाने के लिए एक कार्ययोजना तैयार की।

सायंकाल डॉ. भारिल्ल जैसे ही प्रवचन हेतु सभा मण्डप में उपस्थित हुए, उनके सभी शिष्यों ने सभा मण्डप के दोनों ओर खड़े होकर करतलध्वनि से स्वागत किया और बड़े दादा के साथ उनको विशेष रूप से तैयार मंच तक चले गये।

तदुपरान्त वरिष्ठ शिष्यों ने दोनों दादाओं का बड़े–बड़े हार गुच्छों (कृत्रिम) एवं कलम भेंट करके स्वागत किया। इसके पश्चात् वहाँ उपस्थित भूतपूर्व एवं वर्तमान 97 स्नातक शिष्य जो सभी धवल कुर्ते–पजामे में थे,ने मंच पर खड़े होकर अपने गुरु के समक्ष उनके ही समान वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार का निम्न संकल्प व्यक्त करके उन्हें अनोखी गुरु दक्षिणा समर्पित की।

''हम अपने गुरु डॉ हुकमचन्दजी भारिल्ल के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर उनके समक्ष देव–शास्त्र–गुरु की साक्षीपूर्वक भगवान महावीर आदि तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि में उपदिष्ट कुन्दकुन्दादि आचार्यों, टोडरमलजी आदि विद्वानों एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी द्वारा प्रदर्शित वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार का आजीवन संकल्प लेते हैं।''

शिष्य समुदाय द्वारा प्रदर्शित भावनाओं को देखकर भावविभोर होकर बड़े दादा ने विद्यार्थियों को अपने जीवन की अमूल्य निधि बतलाते हुए सभी को स्व–पर कल्याण में संलग्न रहने का आशीर्वाद प्रदान किया।

छोटे दादा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हमने सुना था कि यदि कोई कार्य पवित्र भावना से किया जाय तो वह शतगुणा होकर फलता है और आज यहाँ यह 97वें गुणा फलित होता देख मैं अभिभूत हूँ और 97वें ही क्यों अभी तो 535 स्नातक महाविद्यालय से निकले हैं और सभी की ऐसी ही भावना है चाहे वें यहाँ उपस्थित हों या नहीं, परन्तु जब उन्हें यह सूचना मिलेगी तो वे भी ऐसा ही संकल्प करेंगे, अत: यह 535 गुणा फला है और अभी यह कार्य निरंतर प्रारम्भ है, इसलिए यह सहस्त्रगुणा फलेगा ऐसा मैं मानता हूँ। और तत्त्वज्ञान की धारा अविरलरूप से प्रवाहित होती रहेगी ह्न इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। मेरे इन छात्रों ने आज ये संकल्प व्यक्त किया है ह्न यह मेरे लिए सबसे बड़ी गुरु दक्षिणा है। कार्यक्रम का संयोजन पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर एवं संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

नोट ह्न डॉ. भारिल्ल के जिन छात्रों ने यह संकल्प लिया, उनकी सूची हम स्थान की सुविधानुसार आगामी अंक में छापेंगे और भी जो स्नातक छात्र हमें अपनी स्वीकृति फोन या पत्र द्वारा देवेंगे, उनके नाम भी इस सूची के अंतर्गत प्रकाशित किये जायेंगे। **ह्न प्रबंध सम्पादक**

पूरे देश में उपकार दिवस धूम-धाम से सम्पन्न

1. **ग्वालियर :** श्री दिग. जैन मुमुक्षु मंडल द्वारा आध्यात्मिकसत्पुरूष श्री कानजी स्वामी जी का 120 वीं जन्म–जयंती **उपकार दिवस** महोत्सव दिनांक 23 अप्रैल से 26 अप्रैल 2009 तक धूम–धाम से मनाया गया, इस अवसर पर तीनलोक महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर स्वर्णरथ में श्री जिनेन्द्रदेव को विराजमान कर भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसका शहर में जगह–जगह स्वागत किया गया। शोभायात्रा में शीतलप्रसाद जैन, रतनचंद जैन क्षेत्रपाल्या, महेशचंद जैन, सचिन जैन, पण्डित अजीतकुमारजी जैन, अमरचंद जैन, पण्डित राजकुमारजी जैन, विमलचंद विजयवर्गीय, पण्डित उत्तमचंदजी जैन आदि प्रमुख महानुभाव उपस्थित थे।

रात्रि में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के जीवन पर विचार–गोष्ठी का आयोजन पण्डित श्यामलालजी विजयवर्गीय की अध्यक्षता में किया गया। सभा का संचालन पण्डित अजीतजी अचल ने किया। गोष्ठी में अनेकों साधर्मी बन्धुओं ने स्वामीजी के प्रति अपने–अपने विचार व्यक्त किये।

2. **विदिशा (म.प्र.) :** यहाँ किलेअन्दर स्थित श्री दि. जिन बडे मंदिर में 26 अप्रैल 09 को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 120 वीं जन्म–जयंती 'उपकार दिवस' पर सभा का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. आर. के. जैन, श्री अमित भैय्या, डॉ. विनोद 'चिन्मय' एवं डॉ. मुकेश 'तन्मय'ने गुरुदेवश्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार व्यक्त किये।

3. **मन्दसौर (म.प्र.) :** यहाँ श्री सीमंधर जिनालय कालाखेत में दिनांक 24 से 26 अप्रैल तक गुरुदेवश्री का जन्म दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी जैन दर्शनाचार्य ध्रुवधाम बांसवाडा के निर्देशन एवं डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर के मार्गदर्शन में नवलब्धि मण्डल विधान, बालकक्षा, जिनेंद्र भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

विधि–विधान के सभी कार्यक्रम मुमुक्षु मंडल मंदसौर के सहयोग से श्री सुमति जैन एवं श्री अभिषेकजी जैन ध्रुवधाम ने संपन्न कराये। विधान के आयोजनकर्त्ता श्री चोथमलजी लोढा परिवार मंदसौर थे।

4. **सोनागिर (म.प्र.) :** सिद्धक्षेत्र स्वर्णगिरी सोनागिरजी की पावन तलहटी में निर्मित बृहद आचार्य कुन्दकुन्द नगर एवं श्री परमागम मंदिरजी में 26 अप्रैल 2009 को श्री कुन्थुनाथ स्वामी का निर्वाण कल्याणक विधान एवं पूज्य गुरुदेवश्री की जयंती उपकार दिवस के रूप में श्री माणकचंदजी लुहाड़िया दिल्ली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें वाणीभूषण पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित जवाहरलालजी विदिशा, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित लालजीरामजी विदिशा, पण्डित केशरीलालजी पाटनी, पण्डित अशोकजी शास्त्री, पण्डित बसंतजी बड़जात्या आदि विद्वानों के उद्बोधन के साथ–साथ आचार्य कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन के छात्रों द्वारा विशेष संवाद प्रस्तुत किये गये।

5. **कोटा (राज.) :** यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन, रामपुरा में मुमुक्षु मंडल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा कोटा के तत्त्वावधान में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जन्म–जयंती का दो दिवसीय कार्यक्रम दिनांक 25 एवं 26 अप्रैल 2009 को पण्डित देवेन्द्रजी मंगलायतन के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

प्रात: एवं सायं आपके समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुए। दिनांक 25 अप्रैल को श्री दिगम्बर जैन पोरवाल मंदिर में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव की प्रथम वर्षगांठ पर पंच परमेष्ठी मंडल विधान का आयोजन विधानाचार्य पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिडावा के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। रात्रि में गुरुदेवश्री के जीवन दर्शन पर आधारित कहान क्रमबद्ध कथा के वीडियो का प्रदर्शन किया गया।

26 अप्रैल को श्री सीमंधर जिनालय इन्द्रविहार कोटा में पूज्य गुरुदेवश्री के जीवन दर्शन पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री एस. सी. जैन अजमेर (मैनेजर, बैंक ऑफ राजस्थान, कोटा) द्वारा की गई। मुख्यवक्ता पण्डित देवेंद्रकुमारजी मंगलायतन थे।

इस अवसर पर डॉ. मानमलजी जैन, श्री भानुप्रकाशजी जैन, श्री ज्ञानचंदजी जैन ने अपने संस्मरण एवं गुरुदेवश्री के माध्यम से समाज के लौकिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में क्या क्या वैचारिक परिवर्तन हुए है आदि अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का संचालन चिन्मय जैन ने किया।

फैडरेशन कोटा संभाग का अधिवेशन सम्पन्न

बिजौलिया (राज.) : यहाँ दिनांक 27 मई, 09 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के कोटा संभाग का अधिवेशन रखा गया।

इस अवसर पर आयोजित सभा में फैडरेशन के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, राजस्थान प्रदेश के मंत्री श्री राजकुमारजी शास्त्री बांसवाडा, कोटा संभाग के अध्यक्ष श्री जयकुमारजी बांरा के साथ–साथ श्री तेजमलजी पटवारी, श्री विनोदजी सेठिया एवं श्री देवेन्द्रजी बिजौलिया मंचासीन थे।

श्री जयकुमारजी बांरा ने कोटा संभाग की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। तत्पश्चात् श्री राजेन्द्र जैन चित्तौड, श्री महावीरप्रसादजी तालेडा, श्री तेजमलजी पटवारी कोटा, श्रीमती मंजुला जैन बिजौलिया, श्री पुष्पचन्द जैन सिंगोली, श्री रमेशजी धनौप्या बिजौलिया, श्री शांतिलालजी लाम्बाखोह, श्री वर्द्धमानजी धनगांव–छोटी बिजौलिया, श्री सुरेशजी भीलवाड़ा, श्री विनोदजी कोटा ने भी अपने–अपने क्षेत्र में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी।

प्रदेश मंत्री पण्डित राजकुमारजी ने अपने उद्बोधनमें पाठशालाओं को खोलने की प्रेरणा दी एवं संभाग अध्यक्ष पण्डित जयकुमारजी को राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत होने पर सम्मानित किया।

राष्ट्रीय संगठन मंत्री पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर ने शाखाओं से श्री टोडरमल महाविद्यालय में प्रवेश लेने के लिए गांव गांव में विद्यार्थीयों को तैयार करने का आव्हान किया।

श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का द्वि

द्वितीय राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

कोलारस (म.प्र.): यहाँ शिक्षण प्रशिक्षण शिविर के दौरान दिनांक 24 मई, 09 को श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री कुलदीपजी जैन सिविल जज सीहोर एवं विशिष्ट अतिथि इंजिनियर संजयकुमारजी खनियांधाना थे। इसके अलावा कार्याध्यक्ष पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, कोषाध्यक्ष धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर एवं कार्यकारिणी सदस्य डॉ. नरेन्द्र जैन जयपुर, रतनचंदजी शास्त्री कोटा, जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, अनेकांतजी भारिल्ल मुंबई आदि मंचासीन थे।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल भी मंचासीन थे। कार्यक्रम की शुरूवात पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा के मंगलाचरण द्वारा हुई।

स्नातक परिषद् के कार्याध्यक्ष पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने सभा की शुरूवात करते हुये कहा कि यह संगठन महाविद्यालय के नये और पुराने स्नातकों का नया संगठन है। इसका परम मूल उद्देश्य स्वयं मोक्षमार्ग में लगना और दूसरों को मोक्षमार्ग में लगाना तथा इसी के साथ गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान को जन–जन तक पहुँचाना है।

डॉ. भारिल्ल ने इस अवसर पर स्नातक परिषद् को अपना आशीर्वाद देते हुये कहा कि जिसप्रकार कच्ची नहर पहले स्वयं पानी से तृप्त होती है, फिर पानी को आगे जाने देती है, उसीप्रकार सभी स्नातकों को कच्ची नहर के समान तत्त्वज्ञान को आकंठ पी लेना चाहिये और जब वह छलकने लगे तब उसे जन–जन तक पहुँचाने के लिये भी तत्पर रहना चाहिये।

धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने महाविद्यालय से अभी तक निकल चुके स्नातकों का संक्षिप्त व्यौरा प्रस्तुत करते हुये उनके प्रगति की जानकारी दी।

इसके अतिरिक्त गणतंत्रजी शास्त्री बांसवाडा, संजयजी शास्त्री खनियांधाना, विकासजी शास्त्री बानपुर, जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, अध्यात्मप्रकाशजी कोलारस, विनीतजी शास्त्री ग्वालियर ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

अन्त में अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने कहा कि स्नातक परिषद इस वर्ष दो महत्वपूर्ण कार्य हाथ में ले रही है। एक कार्य तत्त्वप्रचार से संबंधित है और दूसरा आत्मकल्याण से। इस क्रम में स्नातक परिषद द्वारा 'आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामी का दि. जैन धर्म के उत्थान में योगदान' विषय पर राष्ट्रीय स्तर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा तथा परिषद के सदस्य स्वाध्याय की प्रवृत्ति से जुडे रहें इसके लिये इस वर्ष प्रवचनसार परमागम का स्वाध्याय और वाचना का कार्य किया जावे। इसकी विस्तृत जानकारी यथा समय सभी को दी जायेगी।

इस अवसर पर क्या मृत्यु अभिशाप है, अंतर्द्वन्द पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल तथा मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार पुस्तक श्रीमती शशि प्रकाशचंद सेठी परिवार जयपुर की ओर से उपस्थित सभी स्नातको को भेंट की गई।

सभा का संचालन परिषद के महामंत्री पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया। ●

नंदीश्वर विद्यापीठ में प्रवेशार्थ सूचना

खनियाँधाना (म.प्र.) : चेतनबाग में स्थित श्री नंदीश्वर दिगम्बर जैन विद्यापीठ का आठवां सत्र कक्षा 6 वीं से कक्षा 10 वीं तक (पंचवर्षीय पाठ्यक्रम) 1 जुलाई 09 से प्रारंभ होगा। छात्रों को लौकिक, नैतिक, धार्मिक एवं संस्कार युक्त शिक्षा हेतु योग्यता के आधार पर कक्षा 6 वीं में प्रवेश दिया जायेगा। गतवर्ष 57 छात्र अध्ययनरत थे। प्रवेशेच्छुक छात्रों के चयन हेतु दिनांक 14 जून से 20 जून 2009 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं रत्नत्रय मण्डल विधान चेतनबाग में आयोजित किया गया है। प्रवेशार्थी छात्र 13 जून की रात्रि तक खनियाँधाना पहुँचें।

सम्पर्क : मो. 09425633457, 09977644295

नाइरोबी (केन्या) में समयसार विधान

नाइरोबी (केन्या) : यहाँ दिनांक 1 अप्रैल से 15 अप्रैल 2009 तक डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय'विदिशा के निर्देशन में श्री समयसार महामंडल विधान का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा का समागम भी प्राप्त हुआ।

आयोजन में नाइरोबी के अतिरिक्त लंदन, अमेरिका, मोम्बासा, थीका, कोरिया आदि के आठ सौ से अधिक साधर्मीजनों ने धर्म लाभ लिया।

डॉ. 'तन्मय' की यह चतुर्थ यात्रा है, उनके निर्देशन में हुये इस आयोजन की सफलता पर नैरोबी मंडल के चेयरमेन श्री प्रफुल्ल डी. राजा एवं मानद मंत्री श्री रतिलाल गोवा सुमरिया ने बहुत–बहुत आभार व्यक्त किया।

पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

कोटा (राज.) : यहाँ इन्द्राविहार स्थित सीमंधर जिनालय के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के वार्षिकोत्सव पर त्रिदिवसीय विधान का आयोजन दिनांक 8 से 10 मई 2009 तक किया गया।

इस अवसर पर पंचमेरु नन्दीश्वर मण्डल विधान का आयोजन हुआ। विधान के मध्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रासंगिक विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में आपके द्वारा शंका–समाधान एवं रात्रि में विविध विषयों पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा, पण्डित संदीपजी शास्त्री बड़कुल एवं स्थानीय श्री महेन्द्रजी लुहाडिया ने सम्पन्न कराये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

सभी कार्यक्रम श्री ज्ञानचन्दजी जैन के निर्देशन एवं पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री के संचालन में सम्पन्न हुये।

वेदी शिलान्यास समारोह सम्पन्न

गजपंथा (महा.) : यहाँ सिद्धक्षेत्र गजपंथजी में वेदी शिलान्यास महोत्सव बहुत ही उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रात: श्री सम्मेदशिखर महामंडल विधान के उपरान्त वेदी शिलान्यास सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं ब्र. हेमचंदजी देवलाली के प्रवचनों का लाभ मिला।

आयोजन में गुरुदेवश्री के 120 वें जन्म दिवस पर 120 चित्रों का अनावरण विभिन्न स्थानों से पधारे मुमुक्षु भाईयों ने किया ।

सभी कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित सुबोधजी शाहगढ, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित रमेशजी सनावद ने सम्पन्न कराये। **– बाल. ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर**

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 29

छठवाँ प्रवचन - डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अनादिकालीन मिथ्या मान्यता का जोर ही मिथ्यात्व का जोर है; जिसके कारण हम अपने सुख-दु:ख के कारण दूसरों में ही खोजते हैं और निरन्तर अनंत आकुलता का उपभोग करते रहते हैं।

पण्डित टोडरमलजी कहते हैं कि जबतक तुम इस परम सत्य को नहीं समझोगे कि कोई किसी के जीवन-मरण और सुख-दुख का कर्ता-भोक्ता नहीं है, कोई किसी का स्वामी नहीं है और कोई किसीरूप कभी होता नहीं है; सभी पदार्थ स्वयंरूप हैं, स्वयं के स्वामी और कर्ता-भोक्ता हैं; तबतक सुखी होना संभव नहीं है और यह बात माने बिना राग-द्वेष की परम्परा भी नहीं टूट सकती।

पर में एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्वबुद्धि ही अगृहीत मिथ्यादर्शन है, अगृहीत मिथ्याज्ञान है और इन मिथ्यादर्शन-ज्ञानपूर्वक राग-द्वेष की प्रवृत्ति ही अगृहीत मिथ्याचारित्र है, जो सर्वथा त्याज्य है।

हमारे चित्त में जो बातें बैठ जाती हैं, सो बैठ जाती हैं। हम उसके विरुद्ध सोच भी नहीं सकते, हमारी बुद्धि निरन्तर उसी का अनुसरण करती है।

सामान्य जनों के हृदय में एक बात बैठ गई है या बैठा दी गई है कि दुकानदार बनिये एक नंबर के ठग होते हैं। वे किसी को भी नहीं छोड़ते।

एक दुकानदार से एक किसान ने एक रुपये की सौंप खरीदी। भाग्य से उस सौंप में एक रुपया नगद भी आ गया। अब किसान सोचने लगा कि आज तो बनिया ठगा गया; क्योंकि रुपया तो वापिस आ ही गया, सौंप मुफ्त में आ गई। वह सोच-सोचकर प्रसन्न हो रहा था कि अचानक उसके चित्त में एक प्रश्न खड़ा हुआ कि बनिया तो ठग होता है, वह तो सभी को ठगता है, वह कैसे ठगाया जा सकता है। इसमें भी कोई चाल होगी; पर बहुत सोचने पर वह चाल उसकी समझ में नहीं आई तो गुरुजी के पास पहुँचा।

गुरुजी को सारी बात बताई तो गुरुजी सोच में पड़ गये कि ऐसा कैसे हो सकता है कि बनिया ठगाया जाय ? वह तो ठगनेवाला है। बहुत कुछ सोचने के बाद जब कुछ समझ में नहीं आया तो वे गंभीर हो गये। वैसे तो समझने जैसी भी कोई बात थी नहीं। सौंप की बोरी में एक रुपये का सिक्का गिर गया होगा। वह सौंप के साथ तुलकर आ गया था; पर ऐसा मानने पर तो वह अकाट्य सिद्धान्त खण्डित होता था कि बनिया ठग होते हैं। अत: वे भी चिन्तित हो उठे कि कुछ दाल में काला अवश्य है; क्योंकि वे यह तो मान ही नहीं सकते थे कि बनिया भी ठगाया जा सकता है।

मुहल्ले के लोग इकट्ठे हो गये, पर किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था; सबके चित्त में एक सवाल उठता था कि बनिया कैसे ठगाया जा सकता है ? ऐसा आजतक तो कभी हुआ नहीं, अब कैसे हो सकता है ?

एक बोला ह्न भाई ! कलयुग है, कुछ भी हो सकता है; पर उसकी बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। सब मिलकर बड़े गुरुजी के पास पहुँचे और पूरी बात विगतवार सुनाकर हाथ जोड़कर खड़े हो गये।

बड़े गुरुजी भी असमंजस में पड़ गये। कुछ देर तो वे शान्त रहे, फिर एकदम उचक कर बोले ह्न आ गया समझ में, सबकुछ साफ-साफ ही तो है कि ठग बनिये ने एक तोला सौंप कम तोल दी, ठग लिया न उसने और आप लोग समझ ही नहीं पाये। सब बहुत प्रसन्न हुए; क्योंकि उनकी समझ में सबकुछ आ गया था कि बनिये ने ही किसान को ठगा है।

हमारी भी यही दशा है और हम अगृहीत मिथ्यात्व के जोर में यह सोच भी नहीं पाते कि हमारे अनुकूल-प्रतिकूल जो भी हुआ है, वह सब हमने ही किया है; क्योंकि कोई अन्य व्यक्ति के पुण्य-पाप को हम नहीं भोग सकते और हमारे पुण्य-पाप को अन्य कोई नहीं भोग सकता।

अगृहीत मिथ्यात्व के जोर में हमारी समझ में यह साधारण सी बात भी नहीं आती कि जो करे, सो भरे। हमारी बुद्धि तो निरन्तर दूसरों को उत्तरदायी ठहराने के तर्क खोजती रहती है। यह अगृहीत मिथ्यात्वरूप मोह की महिमा है। इससे अधिक और अब हम क्या कह सकते हैं ?

इसप्रकार अगृहीत मिथ्यादर्शन, अगृहीत मिथ्याज्ञान और अगृहीत मिथ्याचारित्र का स्वरूप स्पष्ट करने के उपरान्त खेद व्यक्त करते हुए पण्डितजी मिथ्यात्वरूप दर्शनमोह की महिमा का बखान करते हुए लिखते हैं ह्न

''ऐसे ये मिथ्यादर्शनादिक भाव जीव के अनादि से पाये जाते हैं, नवीन ग्रहण नहीं किये हैं। देखो इसकी महिमा कि जो पर्याय धारण करता है, वहाँ बिना ही सिखाये मोह के उदय से स्वयमेव ऐसा ही परिणमन होता है। तथा मनुष्यादिक को सत्यविचार होने के कारण मिलने पर भी सम्यक् परिणमन नहीं होता और श्रीगुरु के उपदेश का निमित्त बने, वे बारम्बार समझायें; परन्तु यह कुछ विचार नहीं करता। तथा स्वयं को भी प्रत्यक्ष भासित हो, वह तो नहीं मानता और अन्यथा ही मानता है।

किसप्रकार ? सो कहते हैं ह्न मरण होने पर शरीर-आत्मा प्रत्यक्ष भिन्न होते हैं। एक शरीर को छोड़कर आत्मा अन्य शरीर धारण करता है; वहाँ व्यन्तरादिक अपने पूर्वभव का संबंध प्रगट करते देखे जाते हैं; परन्तु इसको शरीर से भिन्न-बुद्धि नहीं हो सकती।

स्त्री-पुत्रादिक अपने स्वार्थ के सगे प्रत्यक्ष देखे जाते हैं; उनका प्रयोजन सिद्ध न हो तभी विपरीत होते दिखायी देते हैं; यह उनमें ममत्व करता है और उनके अर्थ नरकादिक में गमन के कारणभूत नानाप्रकार के पाप उत्पन्न करता है।

धनादिक सामग्री किसी की भी होती नहीं देखी जाती है, यह उन्हें अपनी मानता है। तथा शरीर की अवस्था और बाह्य सामग्री स्वयमेव उत्पन्न होती है तथा विनष्ट होती दिखायी देती है, यह वृथा स्वयं कर्ता होता है।

वहाँ जो कार्य अपने मनोरथ के अनुसार होता है, उसे तो कहता है ह्न 'मैंने किया' और अन्यथा हो तो कहता है ह्न 'मैं क्या करूँ' 'ऐसा ही होना था अथवा ऐसा क्यों हुआ ?' ह्न ऐसा मानता है। परन्तु या तो सर्व का कर्ता ही होना था या अकर्ता रहना था, सो विचार नहीं है।

तथा मरण अवश्य होगा ह्न ऐसा जानता है, परन्तु मरण का निश्चय

करके कुछ कर्तव्य नहीं करता; इस पर्याय संबंधी ही यत्न करता है।

तथा मरण का निश्चय करके कभी तो कहता है कि ह्न मैं मरूँगा और शरीर को जला देंगे। कभी कहता है कि ह्न मुझे जला देंगे। कभी कहता है ह्न यश रहा तो हम जीवित ही हैं। कभी कहता है ह्न पुत्रादिक रहेंगे तो मैं ही जीऊँगा। ह्न इसप्रकार पागल की भांति बकता है, कुछ सावधानी नहीं है।

तथा अपने को परलोक में जाना है, यह प्रत्यक्ष जानता है; उसके इष्ट–अनिष्ट का तो यह कुछ भी उपाय नहीं करता और यहाँ पुत्र, पौत्र आदि मेरी सन्तति में बहुत काल तक इष्ट बना रहे, अनिष्ट न हो; ऐसे अनेक उपाय करता है। किसी के परलोक जाने के बाद इस लोक की सामग्री द्वारा उपकार हुआ देखा नहीं है; परन्तु इसको परलोक होने का निश्चय होने पर भी इस लोक की सामग्री का ही पालन रहता है।

तथा विषय–कषायों की परिणति से तथा हिंसादि कार्यों द्वारा स्वयं दु:खी होता है, खेदखिन्न होता है, दूसरों का शत्रु होता है, इस लोक में निंद्य होता है, परलोक में बुरा होता है ह्न ऐसा स्वयं प्रत्यक्ष जानता है; तथापि उन्हीं में प्रवर्तता है।

ऐसे अनेकप्रकार से प्रत्यक्ष भासित हो, उसका भी अन्यथा श्रद्धान करता है, जानता है, आचरण करता है; सो यह मोह का माहात्म्य है।

इसप्रकार यह जीव अनादि से मिथ्यादर्शन–ज्ञान–चारित्ररूप परिणमित हो रहा है। इसी परिणमन से संसार में अनेक प्रकार का दु:ख उत्पन्न करनेवाले कर्मों का संबंध पाया जाता है। यही भाव दु:खों के बीज हैं, अन्य कोई नहीं।

इसलिए हे भव्य ! यदि दु:खों से मुक्त होना चाहता है तो इन मिथ्यादर्शनादिक विभावभावों का अभाव करना ही कार्य है; इस कार्य के करने से तेरा परम कल्याण होगा।''

उक्त कथन में पण्डित टोडरमलजी ने अगृहीत मिथ्यादृष्टि जीवों की परिणति का जो चित्र प्रस्तुत किया है; वह न केवल पण्डितजी के समय की स्थिति का चित्र है, अपितु आज भी सर्वत्र वही दृष्टिगोचर होता है। इससे स्पष्ट होता है कि यह स्थिति किसी स्थान विशेष की नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व की है। इसीप्रकार मात्र वर्तमानकाल की नहीं, सदा की है। तात्पर्य यह है कि अगृहीत मिथ्यादृष्टि जीव जहाँ भी होंगे और जब भी होंगे, वहाँ और तब उनकी यही स्थिति रहनेवाली है।

पण्डितजी कहते हैं कि अपने क्षयोपशमज्ञान में यह स्पष्ट हो जाने पर भी कि मेरा आवास इस देह में अवश्य है, पर मैं देह नहीं हूँ। मैं तो देह से भिन्न ज्ञानानन्दस्वभावी आत्मा हूँ। इस देह का संयोग तो अत्यल्प काल का है; अन्तत: तो मुझे इसे छोड़कर ही जाना है; फिर भी सम्पूर्ण जीवन इस शरीर की सेवा में लगा देता है, आत्मा की तो सुध ही नहीं लेता।

इसीप्रकार स्त्री–पुत्रादि और धनादि का संयोग भी अत्यल्प काल का है। यह अगृहीत मिथ्यादृष्टि जीव अपना सम्पूर्ण जीवन देह, स्त्री–पुत्रादि और धनादि की सम्हाल में लगा देता है। अपने आत्मा के संदर्भ में कोई विचार ही नहीं करता।

भक्ष्य–अभक्ष्य से शरीर का पोषण और न्याय–अन्याय से धन का उपार्जन करके अपार पाप का संग्रह करता है। पाप को तो साथ ले जाना पड़ता है और धन यहीं छूट जाता है। देह की आगामी पीढी की चिन्ता मरते दम तक करता है, पर अगले भव में आत्मा का क्या होगा ह्न इसके संबंध में क्षणभर भी नहीं सोचता।

यह तो हम सभी जानते हैं कि मरना तो है ही। किसी को दो–चार वर्ष बाद तो, किसी को दस–बीस वर्ष बाद। यदि किसी की उम्र कम है तो वह अधिक से पचास–साठ वर्ष और जियेगा। सौ वर्ष के भीतर तो सभी को जाना है। हजार–दो हजार वर्ष तक कोई रहनेवाला नहीं है। ऐसा जानकर भी मृत्यु के अन्तिम क्षण तक इस भव की ही चिन्ता करता है, अगले भव के बारे में कोई विचार नहीं करता।

पण्डितजी तो यहाँ तक लिखते हैं कि यह मोह की मदिरा पीकर पागल जैसा हो गया है। कभी दार्शनिक मुद्रा बनाकर कहता है ह्न

हंसा उड़ जायेगा, पक्षी उड़ जायेगा;
अर तू यही पड़ा रह जायेगा।
औरत देहरी तक साथ देगी, बेटा मसान तक ले जायेगा।
सब मिलकर तुझे जला देंगे, तू धू–धूकर जल जायेगा।
हंसा उड़ जायेगा, पंक्षी उड़ जायेगा।

कुछ लोग कहते हैं कि यह वैराग्य का गीत है, कुछ कहते हैं कि इसमें अध्यात्म भरा है; पर मैं कहता हूँ कि यदि यह वैराग्य है, अध्यात्म है तो फिर अज्ञान क्या है, मिथ्यात्व क्या है ?

मैं जानना चाहता हूँ कि मरने पर जो यहाँ पड़ा रह जायेगा, वह तू है या जो उड़ जायेगा, वह तू है। जिसके साथ औरत देहरी तक जावेगी, जिसे बेटा मसान तक ले जायेगा और जिसे सब लोग मिलकर जला देंगे; तू वह है या जो उड़ जावेगा, वह तू है ?

अरे, भाई ! तू तो वह भगवान आत्मा है, जो मृत्यु होने पर अगले भव में चला जाता है; जो यहाँ पड़ी रहेगी, जिसे मसान ले जाया जायेगा और अन्त में जला दिया जायेगा, वह तो देह है।

जिस भजन में तुझे शरीर बताया जा रहा हो, वह तो अगृहीत मिथ्यादर्शन का पोषक है; वह अच्छा कैसे हो सकता है ?

शरीर, स्त्री–पुत्रादि और धनादि का संयोग पुण्य–पाप के उदयानुसार प्राप्त होते हैं; पर यह समझता है कि धनादि को मैंने कमाया है, शरीर को संभाल कर मैंने रखा है, स्त्री–पुत्रादि की रक्षा मैं करता हूँ। अरे, भाई ! स्त्री–पुत्रादि का पुण्य–पाप उसके साथ होता है, उन्हें जो भी अनुकूलता–प्रतिकूलता प्राप्त होती है; वह सब तो उनके पुण्य–पाप का फल है। उसमें तेरा क्या है ? भले ही यह कहता है कि यह सब मैंने किया है, किन्तु जब इसकी इच्छानुसार कार्य नहीं होता है तो कहने लगता है कि मैं क्या करूँ?

इसकी यह शक्ति और प्रवृत्ति अगृहीत मिथ्यादर्शन, अगृहीत मिथ्याज्ञान और अगृहीत मिथ्याचारित्ररूप मोह का परिणाम है।

अधिकार के अन्त में पण्डितजी कहते हैं कि यदि तुम इन सांसारिक दु:खों से मुक्त होना चाहते हो तो इन अगृहीत मिथ्यादर्शनादि विभावभावों का अभाव करने का पुरुषार्थ करो। करने योग्य कार्य तो एकमात्र यही है। इसके करने से तेरा कल्याण अवश्य होगा। ●

2 जून 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का ह्न

31 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

कोलारस (म.प्र.): यहाँ शिक्षण प्रशिक्षण शिविर के दौरान दिनांक 23 मई, 09 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 31 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन श्री ऋषभचन्दजी जैन डबरा ने किया।

इस अवसर पर आयोजित सभा में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभा की अध्यक्षता पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री संदीपकुमारजी कोटा मंचासीन थे। परामर्शदाता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, संगठन मंत्री पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, राजस्थान प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर के अतिरिक्त शिविर आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री गिरनारीलालजी, मंत्री श्री किशनमलजी, संयोजक श्री देवेन्द्रजी, निर्देशक श्री संजीवजी चौधरी एवं फैडरेशन शाखा कोलारस के अध्यक्ष श्री हेमेन्द्र जैन आदि महानुभाव मंचासीन थे।

फैडरेशन के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने संस्था की उपलब्धी एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुये बालकों एवं नवयुवकों को फैडरेशन में शामिल होने का आव्हान किया।

राजस्थान प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्र शास्त्री ने अपने प्रदेश की गतिविधियों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के 75 वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर उनकी हीरक जयन्ती वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर फैडरेशन के द्वारा मनाया जाने का प्रस्ताव रखा, जिसका समर्थन श्री प्रमोदकुमारजी मोदी, मकरोनिया सागर ने एवं सम्पूर्ण सभा ने करतल ध्वनि द्वारा अनुमोदन किया।

यह तो सर्व विदित है कि पूज्य गुरुदेवश्री की हीरक जयंती के अवसर पर तत्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करके सम्मानित किया था तथा आदरणीय युगलजी साहब की हीरक जयंती का आयोजन श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुंबई ने सभी संस्थाओं के सहयोग से किया था, उसी श्रृंखला में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयंती समारोह का आयोजन देश-विदेश की सभी प्रमुख संस्थाओं के सहयोग से फैडरेशन द्वारा किया जा रहा है।

परामर्शदाता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री एवं राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के उद्बोधन का लाभ भी सभा को मिला।

संगठन मंत्री श्री पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने वर्ष भर में श्रेष्ठ कार्य करनेवाली शाखाओं एवं कार्यकर्त्ताओं के नामों की घोषणा की। इसकी सूची आगामी अंक में प्रकाशित की जायेगी।

अध्यक्षीय भाषण में श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि आत्मानुभूति एवं तत्त्वप्रचार के उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह युवा फैडरेशन कार्य कर रहा है एवं इसमें किसी भी प्रकार के व्यक्तिगत राग द्वेष को कोई स्थान नहीं हैं।

फैडरेशन के राष्ट्रीय गीत 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' के गायन के साथ अधिवेशन का समापन हुआ। सभा का संचालन पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

प्रतिभा जगत

डडूका-बांसवाड़ा निवासी सम्यक जैन पुत्र श्री सुशील जैन-उजालारानी जैन ने जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बाँसवाड़ा द्वारा आयोजित आठवीं बोर्ड परीक्षा में जिलास्तरीय मेरिट सूची में 93.26% अंक अर्जित कर छठा स्थान प्राप्त किया है। सम्यक जैन ने गणित, अंग्रेजी और विज्ञान विषयों में क्रमश: 100, 95 और 93 अंक प्राप्त कर यह उपलब्धि हासिल की है।

पायोनियर माध्यमिक विद्यालय गढ़ी में अध्ययनरत सम्यक जैन टोडरमल दि. जैन महाविद्यालय जयपुर के स्नातक श्री रितेशजी शास्त्री के भतीजे हैं।

जैन पथप्रदर्शक परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

आवश्यकता

आत्म साधना केन्द्र, दिल्ली स्थित आत्मार्थी कन्या विद्यानिकेतन में **अधीक्षिका (वार्डन) पद** हेतु एक जैन साधर्मी अनुभवी महिला व **भोजनशाला हेतु** शुद्ध पाककला में दक्ष एक जैन साधर्मी पुरुष की आवश्यकता है। आयु ह्न 25 से 40 वर्ष, वेतनमान ह्न योग्यतानुसार।

शीघ्र सम्पर्क करें ह्न 'अध्यात्मतीर्थ' आत्मसाधना केन्द्र,
घेवरा मोड़, रोहतक रोड़, नई दिल्ली ह्न 110041
फोन नं. ह्न (011) 28351202, 32549067, 9891417386

प्रकाशन तिथि : 28 मई 2009

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127